

न्यूज़ टुडे

वित्त वर्ष 2027 तक भारत की कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता 63 गीगावाट (GW) हो जाएगी

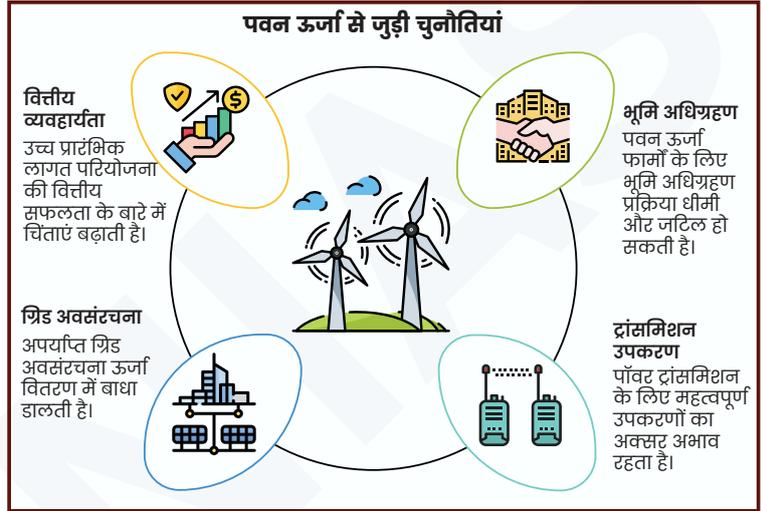
क्रिसिल की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की वार्षिक पवन ऊर्जा क्षमता वित्त वर्ष 2024-25 में लगभग 3.4 GW थी। यह वित्त वर्ष 2026-27 में दोगुनी होकर लगभग 7.1 GW हो जाएगी।

भारत में पवन ऊर्जा की स्थिति

- ▶ कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता: यह एक दशक से भी कम समय में दोगुनी से भी अधिक हो गई है। यह जनवरी 2025 तक 48.16 GW तक पहुंच गई है। वर्तमान में, भारत कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता के मामले में विश्व में चौथे स्थान पर है।
- ▶ नवीकरणीय ऊर्जा में भूमिका: भारत के नवीकरणीय एनर्जी मिक्स में पवन ऊर्जा दूसरी सबसे बड़ी योगदानकर्ता है, जबकि सौर ऊर्जा शीर्ष स्थान पर है। गौरतलब है कि भारत की सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता 100 GW से अधिक है।
- ▶ पवन ऊर्जा उत्पादन की उच्च क्षमता वाले राज्य: गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश आदि।

पवन ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई पहलें

- ▶ राष्ट्रीय पवन-सौर हाइब्रिड नीति (2018): यह भूमि उपयोग और ग्रिड स्थिरता को अनुकूलित करने के लिए पवन एवं सौर ऊर्जा के संयोजन वाली हाइब्रिड परियोजनाओं को बढ़ावा देती है।
- ▶ अपतटीय पवन ऊर्जा नीति (2015): गुजरात और तमिलनाडु के तटों पर पहचानी गई क्षमता के साथ अपतटीय पवन ऊर्जा के विकास को प्रोत्साहित करती है।
- ▶ हरित ऊर्जा मुक्त पहुंच नियम (2022): उपभोक्ताओं के लिए नवीकरणीय ऊर्जा तक आसानी से पहुंच की सुविधा प्रदान करते हैं। इससे पवन ऊर्जा अपनाएने को बढ़ावा मिलता है।
- ▶ नवीकरणीय ऊर्जा क्रय दायित्व (RPO): यह विद्युत वितरण कंपनियों को विद्युत का एक हिस्सा पवन एवं अन्य नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से प्राप्त करने का आदेश देता है।



GTRI (ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव) ने 'टैरिफ्स एंड इंडिया' रिपोर्ट जारी की

इस रिपोर्ट में अमेरिकी रेसिप्रोकल टैरिफ प्लान के संभावित प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, भारत सरकार तथा उद्योग हितधारकों के लिए चांटे को कम करने हेतु अलग-अलग कार्रवाइयों का प्रस्ताव किया गया है।

- ▶ अमेरिकी रेसिप्रोकल टैरिफ प्लान का उद्देश्य उन देशों पर उच्च टैरिफ लगाना है, जिनके साथ अमेरिका का व्यापार घाटा है, ताकि व्यापार असंतुलन को कम किया जा सके।

अमेरिकी रेसिप्रोकल टैरिफ प्लान के प्रभाव

- ▶ भारत पर: भारतीय निर्यात पर मौजूदा 2.8% की तुलना में 4.9% का अतिरिक्त टैरिफ लग सकता है।
- ▶ अलग-अलग क्षेत्रों पर प्रभाव:
 - ⊕ कृषि: कृषि निर्यात पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ेगा तथा झींगा, डेयरी और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों पर 38.2% तक का टैरिफ लगेगा।
 - ⊕ औद्योगिक सामान: फार्मास्यूटिकल्स, हीरे और आभूषण तथा इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात पर सबसे अधिक जोखिम होगा।
 - ◆ उदाहरण के लिए- फार्मास्यूटिकल क्षेत्र पर 10.90% का टैरिफ अंतर जेनेरिक दवाओं की लागत बढ़ा सकता है। इससे भारतीय फार्मास्यूटिकल उत्पादों की मांग प्रभावित होगी और प्रतिस्पर्धा भी कम होगी।
- ▶ न्यूनतम प्रभाव: पेट्रोलियम, खनिज और वस्त्र संबंधी उत्पाद अप्रभावित रह सकते हैं।

रिपोर्ट में की गई सिफारिशें

- ▶ अमेरिका के समक्ष अग्रिम टैरिफ प्रस्ताव प्रस्तुत करना चाहिए, मुक्त व्यापार समझौता (FTA) योजना को फिलहाल के लिए छोड़ देना चाहिए:
- ⊕ भारत को टैरिफ लाइनों की पहचान करके शून्य-के-लिए-शून्य रणनीति का प्रस्ताव करना चाहिए। इससे भारत घरेलू उद्योगों को नुकसान पहुंचाए बिना अमेरिकी आयातों के लिए टैरिफ को समाप्त कर सकता है।
- ▶ जवाबी उपायों को अपनाएना: भारत को अनुचित रियायतों से इनकार करना चाहिए और चीन की प्रतिक्रिया के समान जवाबी उपायों पर विचार करना चाहिए।
- ▶ भारत और अमेरिका द्वारा बताए गए व्यापार डेटा में बड़े अंतर को सुलझाना: गलत आंकड़ों के आधार पर टैरिफ निर्णयों को रोकने का प्रयास करना चाहिए।



आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के उपयोग से भारतीय न्यायपालिका के कामकाज और कानून को लागू करने में बदलाव लाया जा रहा है

मशीन लर्निंग (ML), नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP), ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (OCR), प्रिडिक्टिव एनालिटिक्स जैसी AI-संचालित प्रौद्योगिकियों का उपयोग न्यायिक प्रक्रियाओं, कानूनी अनुसंधान और कानून लागू करने में AI को एकीकृत करने के लिए किया जा रहा है।

भविष्य में विधि और न्याय प्रणाली में AI की निम्नलिखित संभावनाएं हैं:

- AI-संचालित कानूनी अनुसंधान में,
- ब्लॉकचेन की मदद से सुरक्षित तरीके से केस का रिकॉर्ड रखने में,
- AI-एनालिटिक्स के माध्यम से न्यायिक पारदर्शिता बढ़ाने में, और
- कानून को लागू करने के दौरान साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने में।



न्यायिक कार्टवाई और कानून को लागू करने में AI की भूमिका	
<p>डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के माध्यम से न्यायिक प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण</p>	<p>उदाहरण के लिए- ई-कोर्ट परियोजना का तीसरा चरण केस प्रबंधन और कानूनी अनुसंधान में सुधार करने; पूर्वानुमान एनालिटिक्स का उपयोग करके संभावित देरी व स्थगन का पूर्वानुमान लगाने आदि के लिए AI समाधानों को एकीकृत करता है।</p>
<p>निर्णयों का अनुवाद और सभी भाषाओं में सुलभता</p>	<p>AI-असिस्टेड टूल्स का उपयोग करके सुप्रीम कोर्ट के 31,000 से अधिक फैसले 16 क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किए गए हैं।</p> <ul style="list-style-type: none"> • e-SCR (इलेक्ट्रॉनिक सुप्रीम कोर्ट रिपोर्ट्स) पोर्टल पर AI-द्वारा अनुवादित निर्णय उपलब्ध हैं।
<p>कानून को लागू करना और अपराधों की रोकथाम</p>	<p>AI का उपयोग अपराधों की पहचान, निगरानी और अपराधों की जांच प्रणाली को मजबूत करने के लिए किया जा रहा है।</p> <ul style="list-style-type: none"> • पूर्वानुमान आधारित पुलिसिंग: AI मॉडल अपराध के पैटर्न, हाई-रिस्क क्षेत्रों और अपराधियों के व्यवहार का विश्लेषण कर कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सक्रिय कदम उठाने में सहायता प्रदान कर रहे हैं। • निगरानी और जांच: <ul style="list-style-type: none"> ◦ फिजियल रिकग्निशन सिस्टम को राष्ट्रीय अपराध डेटाबेस से जोड़ा गया है; ◦ AI-संचालित फॉरेंसिक विश्लेषण साक्ष्य जुटाने और डिजिटल अपराध के तरीकों की जांच में मदद कर रहा है। • नवोन्मेषी समाधान: <ul style="list-style-type: none"> ◦ AI-एसिस्टेड टूल वॉयस रिकग्निशन के जरिए FIR दर्ज करने में मदद कर रहा है। ◦ ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) का उपयोग अपराध स्थल की जांच के लिए किया जा रहा है। • अन्य समाधान: इनमें शामिल हैं; क्राइम एंड क्रिमिनल ट्रैकिंग नेटवर्क सिस्टम (CCTNS), ई-प्रिजन, ई-फॉरेंसिक डेटाबेस का एकीकरण आदि।

भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में अगले कुछ वर्षों में पांच गुना वृद्धि की उम्मीद प्रकट की गई

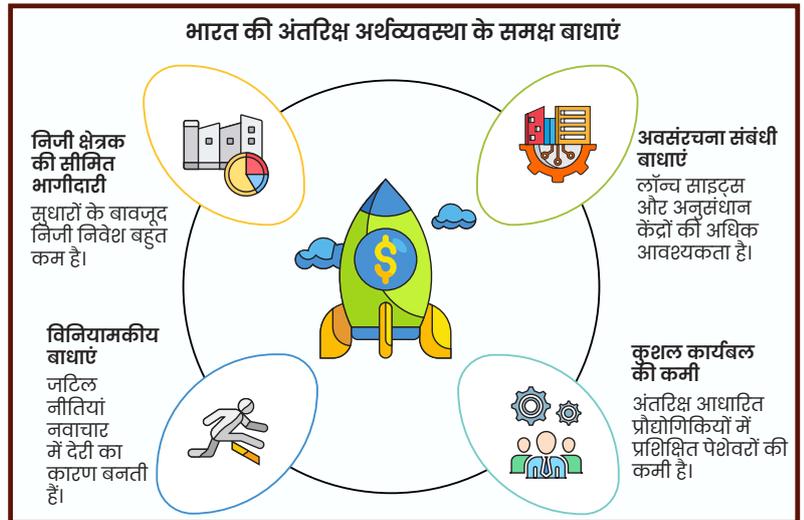
भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था पांच गुना वृद्धि के साथ विकसित भारत 2047 के विज़न में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था

- वर्तमान स्थिति: भारतीय अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का मूल्य 8.4 बिलियन डॉलर है, जो वैश्विक अंतरिक्ष बाजार का 2% है।
- अर्थव्यवस्था में योगदान: पिछले दशक में GDP में 20,000 करोड़ रुपये के योगदान के साथ इसने 96,000 लोगों को नौकरियां भी प्रदान की थी।
 - ⊕ अंतरिक्ष क्षेत्रक में प्रत्येक डॉलर का निवेश 2.54 डॉलर का आर्थिक प्रभाव उत्पन्न करता है। इस प्रकार, यह भारत के व्यापक उद्योग की तुलना में 2.5 गुना अधिक उत्पादक बन जाता है।
- विज़न: सरकार का लक्ष्य 2033 तक वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में 8% हिस्सेदारी प्राप्त करना है। इससे अंतरिक्ष क्षेत्रक की अर्थव्यवस्था 44 बिलियन डॉलर तक पहुंच सकेगी।
- राष्ट्र निर्माण में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की भूमिका
 - भूमि डिजिटलीकरण: उदाहरण के लिए स्वामित्व योजना के तहत उपग्रहों की मदद से भूमि रिकॉर्ड में पारदर्शिता सुनिश्चित की जाती है।
 - संसाधन मानचित्रण: अंतरिक्ष आधारित तकनीक हिमालयी और समुद्री संसाधनों के दोहन में सहायता करती है।
 - अंतरिक्ष क्षेत्रक में महिलाएं: इसरो के कार्यबल में 20-25% महिलाएं हैं, जो चंद्रयान जैसे प्रमुख मिशनों में योगदान देती हैं।
 - नेविगेशन और संचार: इसरो का नाविक (NavIC) नेशनल पोजिशनिंग और कनेक्टिविटी को बढ़ाता है।

अंतरिक्ष क्षेत्रक के लिए शुरू की गई महत्वपूर्ण पहलें

- अंतरिक्ष बजट: यह 2013-14 में 5,615 करोड़ रुपये से लगभग तीन गुना बढ़कर 2025-2026 में 13,416 करोड़ रुपये हो गया है।
- भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACe): इसे अंतरिक्ष आधारित गतिविधियों में निजी क्षेत्रक की भागीदारी को बढ़ावा देने और उसके पर्यवेक्षण के लिए 2020 में स्थापित किया गया था।
- अन्य: इसमें भारतीय अंतरिक्ष नीति 2023, 100% FDI की अनुमति, 1,000 करोड़ वेंचर कैपिटल (VC) फंड आदि शामिल हैं।



संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कहा परमाणु हथियार 'विनाश का एकतरफा मार्ग' हैं

यह चेतावनी उस संदर्भ में भी आई है, जब पिछले माह डूमसडे क्लॉक आधी रात के एक सेकंड और करीब आ गई।

डूमसडे क्लॉक को 1947 में बुलेटिन ऑफ द एटॉमिक साइंटिस्ट्स द्वारा पेश किया गया था। यह प्रतीकात्मक रूप से यह दर्शाती है कि मानवता आत्म-विनाश के कितने करीब है।

परमाणु हथियारों के कारण उत्पन्न वर्तमान जोखिम

- वैश्विक सुरक्षा चिंताओं में वृद्धि: भू-राजनीतिक तनाव, राष्ट्रों के बीच विश्वास में कमी, और सैन्य खर्चों में वृद्धि से परमाणु संघर्ष की संभावना बढ़ रही है।
- निरस्त्रीकरण फ्रेमवर्क का क्षरण: परमाणु परीक्षण और प्रसार के खिलाफ प्रमुख संधियों एवं मानदंडों को कमजोर किया जा रहा है।
- परमाणु ब्लैकमेल: विरोधी देशों को भयभीत करने के लिए परमाणु हथियारों के उपयोग की धमकी वैश्विक अस्थिरता को बढ़ावा देती है।
- आविष्कारों का विस्तार: देश अपने परमाणु हथियारों की संख्या बढ़ा रहे हैं और बाह्य अंतरिक्ष में हथियारों की तैनाती जैसी नए हथियारों की दौड़ शुरू हो गई है।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को हथियार बनाना: यह मानव नियंत्रण को कम कर सकता है, जिससे बिना उद्देश्य के ही परमाणु हथियारों के इस्तेमाल का खतरा बढ़ सकता है।

अप्रसार प्रयास

- निःशस्त्रीकरण सम्मेलन: इसका एजेंडा परमाणु निरस्त्रीकरण, बाह्य अंतरिक्ष में हथियारों की दौड़ को रोकना, और नए प्रकार के व्यापक विनाशकारी हथियारों की समस्या का समाधान खोजना है।
- परमाणु अप्रसार संधि (NPT): इसका उद्देश्य परमाणु हथियारों और उनकी तकनीक के प्रसार को रोकना तथा परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना है।
- व्यापक परमाणु परीक्षण-प्रतिबंध संधि (CTBT): यह सैन्य या शांतिपूर्ण किसी भी उद्देश्य से किए गए सभी परमाणु विस्फोटों पर प्रतिबंध लगाती है।
- अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA): यह परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग में वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के लिए दुनिया के अग्रणी अंतर-सरकारी मंच के रूप में कार्य करती है।

भारत की पहली स्वदेशी सेमीकंडक्टर चिप 2025 तक उत्पादन के लिए तैयार हो जाएगी

यह आयातों पर निर्भरता कम करने और भारत की वैश्विक सेमीकंडक्टर उद्योग में स्थिति को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

- भारत का सेमीकंडक्टर विनिर्माण उद्योग अभी भी अपने प्रारंभिक चरण में है और यह सेमीकंडक्टर चिप के लिए ताइवान, चीन जैसे अन्य देशों पर बहुत अधिक निर्भर है।
- स्वदेशी चिप विकसित करने से राष्ट्रीय सुरक्षा बढ़ेगी, व्यापार घाटा कम होगा और घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग को बढ़ावा भी मिलेगा।

भारत का सेमीकंडक्टर उद्योग

- भारतीय सेमीकंडक्टर बाजार: इसका मूल्य 2023 में लगभग 38 बिलियन डॉलर था, तथा 2030 तक इसका मूल्य 109 बिलियन डॉलर तक हो जाने का अनुमान है।
- संभावना: भारत का सेमीकंडक्टर उपभोग बाजार 2030 तक 13% की मजबूत चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़ने की उम्मीद है।

चुनौतियां

- पूँजी-प्रधान क्षेत्रक: उदाहरण के लिए, एक सेमीकंडक्टर फैब स्थापित करने हेतु 10 बिलियन डॉलर से अधिक की आवश्यकता होती है।
- कुशल कार्यबल का अभाव: भारत को सेमीकंडक्टर डिजाइन, विनिर्माण और परीक्षण में विशेषज्ञों की आवश्यकता है।
- कच्चे माल हेतु आयात पर निर्भरता: इस क्षेत्रक से संबंधित महत्वपूर्ण कच्चे माल जैसे सिलिकॉन वेफर और सेमीकंडक्टर चिप का आयात किया जाता है।

इस क्षेत्रक के लिए शुरू की गई पहलें

- सेमीकॉन इंडिया प्रोग्राम: इसका उद्देश्य घरेलू सेमीकंडक्टर उद्योग को प्रोत्साहन और रणनीतिक साझेदारी के माध्यम से बढ़ावा देना है।
- इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन: इस मिशन का उद्देश्य एक सक्रिय सेमीकंडक्टर और डिस्ले इकोसिस्टम बनाना है, ताकि भारत इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण एवं डिजाइन के लिए एक वैश्विक केंद्र के रूप में उभर सके।
- बड़ी कंपनियों के साथ साझेदारी: भारत में विनिर्माण इकाइयां स्थापित करने के लिए माइक्रोन, फॉक्सकॉन जैसी कंपनियों के साथ भागीदारी की गई है।

अन्य सुर्खियां

टाइम यूज सर्वे (TUS)

हाल ही में, राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) ने 2024 के लिए दूसरा टाइम यूज सर्वे (TUS) जारी किया।

टाइम यूज सर्वे (TUS) के बारे में

- प्रमुख उद्देश्य: यह जनसंख्या द्वारा अलग-अलग गतिविधियों पर व्यतीत किए गए समय को मापने के लिए एक फ्रेमवर्क प्रदान करता है।
- अन्य उद्देश्य: वैतनिक और अवैतनिक गतिविधियों में पुरुषों एवं महिलाओं की भागीदारी का मापना करना।
- मुख्य निष्कर्ष:
 - रोजगार से संबंधित गतिविधियों (वैतनिक कार्यों) में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है।
 - भारतीय परिवारों में जेंडर की परवाह किए बिना देखभाल संबंधी गतिविधियों को मान्यता मिल रही है।
 - जनसंचार माध्यमों और खेलकूद संबंधी गतिविधियों में पुरुषों एवं महिलाओं दोनों द्वारा व्यतीत किए गए समय में वृद्धि हुई है।

SPHEREx स्पेस टेलीस्कोप

नासा स्पेसएक्स फाल्कन 9 रॉकेट से SPHEREx स्पेस टेलीस्कोप को लॉन्च करेगा।

SPHEREx स्पेस टेलीस्कोप के बारे में

- इसका पूरा नाम स्पेक्ट्रो-फोटोमीटर फॉर द हिस्ट्री ऑफ यूनिवर्स, एपाक ऑफ रिआयोनोइजेशन एंड आइस एक्सप्लोरर।
- उद्देश्य: ऑप्टिकल और नियर-इन्फ्रारेड प्रकाश में अंतरिक्ष का सर्वेक्षण करना।
- कार्यावधि: 2 वर्ष।
- उद्देश्य:
 - आकाशगंगाओं के वितरण का मानचित्रण करते हुए ब्रह्मांड की उत्पत्ति का पता लगाना।
 - यह मिल्की वे में 100 मिलियन तारों और 450 मिलियन आकाशगंगाओं से संबंधित डेटा को एकत्र करेगा।
 - 102 रंगों (प्रकाश की अलग-अलग तरंगदैर्घ्य) में ब्रह्मांड का 3-डी मानचित्र बनाना।
 - कॉस्मिक इन्फ्लेशन के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
 - कॉस्मिक इन्फ्लेशन बिग बैंग के बाद अत्यल्प समय में एक बिंदु से ब्रह्मांड के तेजी से और घातीय विस्तार की परिघटना है।



ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE)

ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) ने कार्बन बाजार पर पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन “प्रकृति (PRAKRITI) 2025” का आयोजन किया। प्रकृति से आशय “प्रोमोटिंग रेसिलियंस, अवेयरनेस, नॉलेज एंड रिसोर्सेज फॉर इंटीग्रेटिंग ट्रांसफॉर्मेशनल इनिशिएटिव्स” है।

- इसका उद्देश्य भारतीय कार्बन बाजार की समझ, वैश्विक कार्बन बाजार की गतिशीलता आदि के बारे में जानकारी प्रदान करना है।

ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) के बारे में

- उत्पत्ति: ऊर्जा संरक्षण अधिनियम, 2001 के तहत स्थापित।
- उद्देश्य: भारतीय अर्थव्यवस्था की ऊर्जा तीव्रता को कम करना।
- विज़न: भारतीय अर्थव्यवस्था की ऊर्जा तीव्रता में सुधार लाना, जिससे देश के संधारणीय विकास में योगदान दिया जा सके।
- मिशन: ऊर्जा संरक्षण अधिनियम, 2001 के समग्र फ्रेमवर्क के भीतर, स्व-विनियमन और बाजार संबंधी सिद्धांतों पर बल देते हुए नीतियों एवं रणनीतियों को विकसित करना।



स्वायत्त (SWAYATT) पहल

सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM) पर स्वायत्त पहल के रूपांतरकारी प्रभाव के 6 वर्ष पूरे हुए।

- GeM एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है, जो सरकारी खरीदारों द्वारा सामान्य उपयोग की वस्तुओं और सेवाओं की खरीद के लिए संपूर्ण समाधान प्रदान करता है।

स्वायत्त (SWAYATT) पहल के बारे में

- इसका पूरा नाम “स्टार्ट-अप, वीमेन एंड यूथ एडवांटेज थ्रू ई-ट्रांजैक्शन इनिशिएटिव” है।
- उत्पत्ति: इसे 2019 में GeM पर लॉन्च किया गया था।
- उद्देश्य: सार्वजनिक खरीद में महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों और युवाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना।
- पहले: स्टार्ट-अप रनवे और वुमनिया स्टोरफ्रंट जैसी पहलों से स्टार्ट-अप, महिला उद्यमियों और युवाओं को बेहतर पहुंच मिलती है। इससे उन्हें देश भर के लाखों सरकारी खरीदारों से जुड़ने का अवसर मिलता है।



अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की 25वीं वर्षगांठ मनाई गई।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के बारे में

- यह दिवस वर्ष 2000 से प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को मनाया जाता है।
- अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने का विचार बांग्लादेश की पहल थी। इसे 1999 के यूनेस्को महासम्मेलन में अनुमोदित किया गया था।
- उद्देश्य: समावेशिता, बहुभाषी शिक्षा और अल्पसंख्यक एवं स्वदेशी भाषाओं के संरक्षण को बढ़ावा देना।
- विश्व स्तर पर 40% जनसंख्या को उस भाषा में शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा नहीं है, जिसे वे बोलते या समझते हैं।



शैवाल प्रस्फुटन (Algal Bloom)

एक हालिया अध्ययन में चेतावनी दी गई है कि जलवायु परिवर्तन के कारण इंग्लैंड की टेम्स नदी में शैवाल प्रस्फुटन में बढ़ोतरी हो सकती है।

शैवाल प्रस्फुटन के बारे में

- परिभाषा: शैवाल प्रस्फुटन ताजे, लवणीय या खारे जल में सूक्ष्म शैवाल या शैवाल जैसे बैक्टीरिया की अत्यधिक वृद्धि को कहते हैं।
- शैवाल प्रस्फुटन कई रंगों का हो सकता है, जिनमें नीला-हरा, पीला, भूरा, गुलाबी और लाल शामिल हैं।
- प्रकार
 - सायनोबैक्टीरिया (नील-हरित शैवाल): यह सबसे सामान्य प्रकार का हानिकारक शैवाल प्रस्फुटन है, जो मीठे पानी की झीलों, तालाबों और नदियों में दिखाई देता है।
 - गोल्डन एल्गी (प्राइमनेसियम पार्वम): यह मुख्य रूप से महासागरों में पाया जाता है, लेकिन अब मीठे जल स्रोतों को भी प्रभावित कर रहा है।
 - सायनोबैक्टीरिया के विपरीत, यह मनुष्यों को नुकसान नहीं पहुंचाता है।



जैवविविधता रिसाव (Biodiversity Leak)

हालिया अध्ययन से पता चला है कि समृद्ध देशों में किए गए संरक्षण प्रयास अन्य देशों में जैव विविधता की हानि को बढ़ा सकते हैं।

जैव विविधता रिसाव के बारे में

- जैव विविधता रिसाव से तात्पर्य किसी क्षेत्र में जैव विविधता की अनपेक्षित हानि से है। यह हानि संरक्षण या पर्यावरण नीतियों के कारण होती है, जिससे पर्यावरणीय हानि कहीं अन्यत्र स्थानांतरित हो जाती है।
- जैव विविधता रिसाव के प्रभाव:
 - वैश्विक जैव विविधता की हानि,
 - संकटग्रस्त प्रजातियों के लिए खतरा,
 - जलवायु परिवर्तन में तेजी आदि।



स्वालबार्ड ग्लोबल सीड वॉल्ट

स्वालबार्ड ग्लोबल सीड वॉल्ट में 14,000 से अधिक नए सैंपल्स आए हैं। इसे आर्कटिक ड्रूमडे सीड वॉल्ट के नाम से भी जाना जाता है।

स्वालबार्ड ग्लोबल सीड वॉल्ट के बारे में

- अवस्थिति: आर्कटिक द्वीप (नॉर्वे)।
- स्वामित्व और प्रबंधन: यह नॉर्वे के स्वामित्व में है। इसका प्रबंधन नॉर्वे के कृषि एवं खाद्य मंत्रालय, क्षेत्रीय जून बैंक नॉर्डजेन और क्रॉप ट्रस्ट के बीच साझेदारी में किया जाता है।
- महत्व: यह सभी जीन बैंकों से प्राप्त बीज प्रतियों का सुरक्षित, निःशुल्क और दीर्घकालिक भंडारण है। यह परमाणु युद्ध, मानव संघर्ष, जलवायु परिवर्तन आदि की स्थिति में बैकअप के रूप में कार्य करेगा।
- कार्यप्रणाली: कम तापमान (-18°C), परमाफ्रॉस्ट और मोटी चट्टान यह सुनिश्चित करती है कि बीज के नमूने बिजली के बिना भी जमे रहेंगे।
- मुख्य योगदान: सीरियाई युद्ध में खोए बीज संग्रह को पुनः जुटाया गया था।

सुर्खियों में रहे स्थल



दक्षिण कोरिया (राजधानी: सियोल)

2024 में दक्षिण कोरिया की जन्म दर 9 वर्षों में पहली बार बढ़ी है।

दक्षिण कोरिया के बारे में

- भौगोलिक अवस्थिति
 - अवस्थिति: पूर्वी एशिया।
 - सीमाएं: 38वीं समानांतर के साथ उत्तर कोरिया (उत्तर) से लगती है।
 - समुद्री सीमा: इसके पूर्व में पूर्वी सागर (जापान सागर), तथा पश्चिम में पीला सागर स्थित है।
- भौगोलिक विशेषताएं
 - पर्वत: इसके पूर्वी तट पर ताएबेक पर्वत है।
 - द्वीप: जेजू द्वीप और उल्युंग द्वीप।
 - नदियां: हान नदी।



अहमदाबाद



बेगलूर



भोपाल



चंडीगढ़



दिल्ली



गुवाहाटी



हैदराबाद



जयपुर



जोधपुर



लखनऊ



प्रयागराज



पुणे



रांची